

चतुर्वर्षीयशास्त्रीप्रतिष्ठा(व्याकरणम्) Four Year B.A. (Hon.) in Vyakarana

पाठ्यक्रमस्योद्देश्यानि –

- भाषायाः परिष्कारकस्य व्याकरणशास्त्रस्य आद्योपान्तावबोधनम्।
- साम्प्रतिके सर्वत्र प्रवृत्तत्वात् पाणिनिव्याकरणस्याध्ययनम्।
- व्याकरणशास्त्रस्येतिहासपुरस्सरं पाणिनिपरम्परायाः सम्यग्ज्ञानम्।
- लघुसिद्धान्तकौमुदी इत्यारभ्य सकलव्याकरणग्रन्थानामवबोधनम्।
- भाषापरिष्कारायावश्यकानां सन्धि-कारक-समासादिविषयाणां ज्ञानम्।
- सुबन्त-कृदन्त-तद्धित-तिङन्त-स्त्रीप्रत्ययानामवबोधनम्।
- व्याकरणदर्शनस्यावबोधनम्।
- संस्कृतव्याकरणं मुख्यविषयत्वेन स्वीकृत्य अन्येषामपि वेदाङ्गानानां बोधः।
- संस्कृतादतिरिक्तम् आधुनिकविषयाणामप्यवबोधनम्।
- असमीयेति प्रान्तीयभाषायाः ज्ञानम्।
- अनेन पाठ्यक्रममाध्यमेन अध्येतृणां सर्वाङ्गीणविकासाय प्रयत्नः।

पाठ्यक्रमस्य परिणामाः –

- सकलव्याकरणशास्त्रस्येतिहासज्ञानपुरस्सरं पाणिनिपरम्परायां सुदृढा भविष्यति।
- पाणिनिव्याकरणशास्त्रस्य आद्योपान्तावबोधनेन भाषाशुद्धौ सक्षमाः भविष्यन्ति।
- पाणिनिव्याकरणस्य सम्पूर्णप्रक्रियाग्रन्थेषु प्रतिपादितानां विषयाणां सम्यक्तया बोधो भविष्यति।
- पाणिनिव्याकरणस्य दार्शनिकशास्त्रेषु चर्चितानां विषयाणां बोधो भविष्यति।
- पाणिनिव्याकरणस्य दार्शनिकानां ग्रन्थानां न्यायशास्त्रदृष्ट्या ज्ञाने सक्षमाः भविष्यन्ति।
- व्याकरणेन न्याय-साहित्य-वेदादिशास्त्राण्यपि सिद्धानि भविष्यन्ति।
- पाठ्यक्रमोऽयम् उद्योगप्राप्तिकारको भविष्यति।

चतुर्वर्षीयव्याकरणशास्त्री(प्रतिष्ठा)पाठ्यक्रमस्य प्रारूपम्
(Structure of FYUG Programme in Vyakrana)

| COURSE NO. | | SEMESTER –I | Hours / Week | Tutorial / Week | Credit | Internal Marks | External Marks |
|--|---------------|--|--------------|-----------------|-----------|----------------|----------------|
| | | NAME OF PAPER | | | | | |
| CVYA101 | CORE (DSC-1) | लघुसिद्धान्तकौमुदी-1 (आदितः पञ्चसन्धिं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA102 | MINOR (DSE-1) | वेदः / साहित्यम् / सर्वदर्शनम् / न्यायः / ज्योतिषम् / धर्मशास्त्रम् / वेदान्त / मीमांसा / व्याकरणम् (व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते) (लघुसिद्धान्तकौमुदी-1 (आदितः पञ्चसन्धिं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| IDCPSC103/ IDCPHL103/ IDCEDN103/ IDCASM103/ IDCHIS103 | IDC-1 | राजनीतिविज्ञानम् / दर्शनशास्त्रम् / शिक्षाशास्त्रम् / असमीया / इतिहासः | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| AECENG104 | AEC-1 (Lan-1) | आङ्गलम् | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| VACEVS105 | VAC-1 | पर्यावरणाध्ययनम् | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| SECIT106/ SECMC106/ SECCS106 | SEC-1 | Information Technology / Mushroom Cultivation / संस्कृतसम्भाषणम् | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| TOTAL CREDITS | | | | | 20 | | |
| SEMESTER –II | | | | | | | |
| CVYA201 | CORE (DSC-2) | लघुसिद्धान्तकौमुदी-2 (अजन्तपुंलिङ्गतः अव्ययं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA202 | MINOR (DSE-2) | वेदः / साहित्यम् / सर्वदर्शनम् / न्यायः / ज्योतिषम् / धर्मशास्त्रम् / वेदान्त / मीमांसा / व्याकरणम् (व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते) लघुसिद्धान्तकौमुदी-2 (अजन्तपुंलिङ्गतः अव्ययं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| IDCPSC203/ IDCPHL203/ IDCEDN203/ IDCASM203/ IDCHIS203 | IDC-2 | राजनीतिविज्ञानम् / दर्शनशास्त्रम् / शिक्षाशास्त्रम् / असमीया / इतिहासः | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| AECASM204 AECSKT204 | AEC-2 (Lan-2) | असमीया/ संस्कृतम् | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| VACYOG205 | VAC-2 | Introduction to Yoga | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| VACCWT206 VACSF206 | SEC-2 | Creative Writing and Translation / Preparation Short flim | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| TOTAL CREDITS | | | | | 20 | | |
| Exit option with 40 Credits : व्याकरणशास्त्रे प्रमाणपत्रम् (Certificate in Vyakarana) | | | | | | | |
| SEMESTER-III | | | | | | | |
| CVYA301 | CORE (DSC-3) | सिद्धान्तकौमुदी-1 (आदितः अव्ययं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| CVYA302 | CORE (DSC-4) | सिद्धान्तकौमुदी-2 (कारकप्रकरणतः समासाश्रयप्रकरणं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA303 | MINOR (DSE-3) | वेदः / साहित्यम् / सर्वदर्शनम् / न्यायः / ज्योतिषम् / धर्मशास्त्रम् / वेदान्त / मीमांसा / व्याकरणम् (व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |

| | | | | | | | |
|--|------------------|---|---|---|-----------|----|----|
| | | सिद्धान्तकौमुदी-1 (कारक समासश्च) | | | | | |
| IDCPSC304/ IDCPHL304/ IDCEDN304/ IDCASM304/ IDCHIS304 | IDC-3 | राजनीतिविज्ञानम् / दर्शनशास्त्रम् / शिक्षाशास्त्रम् / असमीया / इतिहासः | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| AECLS305 | AEC-3 | Life Skill | 3 | 1 | 2 | 20 | 80 |
| SECCS306 | SEC-3 | Cyber Security | 4 | 1 | 3 | 20 | 80 |
| | | TOTAL CREDITS | | | 20 | | |
| SEMESTER -IV | | | | | | | |
| CVYA401 | CORE (DSC-5) | सिद्धान्तकौमुदी-3 (अपत्यादिप्रकरणतः द्विरुक्तप्रकरणं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| CVYA402 | CORE (DSC-6) | सिद्धान्तकौमुदी-4 (भवादितः चुरादिप्रकरणं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA403 | CORE (DSC-7) | प्रौढमनोरमा-1 (आदितः परिभाषाप्रकरणं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA404 | MINOR (DSE-4) | वेदः / साहित्यम् / सर्वदर्शनम् / न्यायः / ज्योतिषम् / धर्मशास्त्रम् / वेदान्त / मीमांसा / व्याकरणम् (व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते) लघुसिद्धान्तकौमुदी-3 (भवादितः चुरादिप्रकरणं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| AECAC405/ AECSE405 | AEC-4 | Studies of Assamese Culture/ Spoken English | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| | | TOTAL CREDITS | | | 20 | | |
| Exit option with 80 Credits : व्याकरणशास्त्रे पदविका (Diploma in Vyakarana) | | | | | | | |
| SEMESTER-V | | | | | | | |
| CVYA501 | CORE (DSC-8) | सिद्धान्तकौमुदी-4 (स्त्रीप्रत्ययः णिचप्रकरणतः लकारार्थप्रकरणं यावच्च) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| CVYA502 | CORE (DSC-9) | सिद्धान्तकौमुदी-5 (कृत्यं कृदन्तप्रकरणञ्च) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA503 | CORE (DSC-10) | परमलघुमञ्जूषा | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA504 | CORE (DSC-11) | प्रौढमनोरमा-2 (अचसन्धितः स्वादिसन्धिं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA505 | MINOR (DSE-5) | वेदः / साहित्यम् / सर्वदर्शनम् / न्यायः / ज्योतिषम् / धर्मशास्त्रम् / वेदान्त / मीमांसा / व्याकरणम् (व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते) सिद्धान्तकौमुदी-2 (कृत्यं कृदन्तप्रकरणञ्च) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| | | TOTAL CREDITS | | | 20 | | |
| SEMESTER-VI | | | | | | | |
| CVYA601 | CORE (DSC-12) | प्रौढमनोरमा-3 (कारकम्, अव्ययीभावश्च) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| CVYA602 | CORE (DSC-13) | सिद्धान्तकौमुदी-6 (स्वरवैदिकी) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA603 | CORE (DSC-14) | प्रौढमनोरमा -4 (अजन्तपुल्लिङ्गप्रकरणम्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA604 | CORE (DSC-15) | महाभाष्यम् (पस्पशा-प्रत्याहारान्हिकम्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA605 | MINOR (DSE-6) | वेदः / साहित्यम् / सर्वदर्शनम् / न्यायः / ज्योतिषम् / धर्मशास्त्रम् / वेदान्त / मीमांसा / व्याकरणम् (व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |

| | | | | | | | |
|--|------------------|--|---|---|-----------|----|-----|
| | | महाभाष्यम् (पस्पशा-प्रत्याहारान्हिकम्) | | | | | |
| | | TOTAL CREDITS | | | 20 | | |
| Exit option with 120 Credits : व्याकरणशास्त्रे शास्त्री (B.A. in Vyakarana) | | | | | | | |
| SEMESTER-VII | | | | | | | |
| CVYA701 | CORE (DSC-16) | वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| CVYA702 | CORE (DSC-17) | परिभाषेन्दुशेखरः -1 (आदितः अकृतव्यूहाः पाणिनीया यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| MVYA703 | CORE (DSC-18) | लघुशब्देन्दुशेखरः-1 (आदितः परिभाषाप्रकरणपर्यन्तम्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| SECRM704 | SEC-4 | संस्कृतशोधप्रविधिः | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| SEM705 | Value Added | सम्मेलनम्(शास्त्रार्थसभा) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| | | TOTAL CREDITS | | | 20 | | |
| SEMESTER-VI | | | | | | | |
| CVYA801 | CORE (DSC-19) | परिभाषेन्दुशेखरः-2 (अन्तरङ्गादप्यपवादो बलीयान् इत्यारभ्य ग्रन्थसमाप्तिं यावत्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| CVYA802 | CORE (DSC-20) | लघुशब्देन्दुशेखरः -2 (अचसन्धितः स्वादिसन्धिपर्यन्तम्) | 5 | 1 | 4 | 20 | 80 |
| DIS803 | | लघुशोधप्रबन्धः | 5 | 1 | 12 | 60 | 240 |
| | | TOTAL CREDITS | | | 20 | | |
| Exit option with 120 Credits : व्याकरणशास्त्रे शास्त्री(प्रतिष्ठा) (B.A.(Hon) in Vyakarana)/ व्याकरणशास्त्रे शोधोपाधिः/ Research Programme in Vyakarana | | | | | | | |

मूल्याङ्कनयोजना –

- प्रत्येकं सत्रे आन्तरिकी-बाह्ये परीक्षे भवतः।
 - आन्तरिकीपरीक्षा – 20%
- प्रतिपत्रं मूल्याङ्कस्य प्रारूपम् -

| क्र.सं. | मूल्याङ्कनम् | पूर्णाङ्काः |
|----------------------|---|------------------------|
| 1. | लिखितपरीक्षा | 30 |
| 2. | संगोष्ठी/ गृहकार्यम्/ उपस्थिति/ शैक्षिकभ्रमणम् | 10 |
| | | 40 |
| प्राप्ताङ्कग्रहणम् - | | = प्राप्ताङ्काः(1+2)/2 |

- बाह्य(सत्रान्त)परीक्षा – 80%

➤ प्रश्नपत्रनिर्माणयोजना –

1. प्रश्नपत्रस्य भाषा संस्कृतं वर्तते।
2. प्रश्नपत्रे पूर्णाङ्का अशीतिः(80) सन्ति।
3. प्रश्नपत्रे खण्डत्रयमस्ति।
4. प्रथमखण्डे अतिलघूत्तरात्मकाः दश(10) प्रश्ना भवन्ति सर्वे अनिवार्याः, प्रत्येकं प्रश्नाः एकाङ्कात्मकाश्च।
5. द्वितीयखण्डे लघूत्तरात्मकाः सप्त(07)प्रश्नाः भवन्ति सप्तसु पञ्चानामुत्तराण्यपेक्षितानि भविष्यन्ति। प्रत्येकं प्रश्नाः षडाङ्कात्मकाः(6) भवन्ति।
6. तृतीयखण्डे दीर्घोत्तरात्मकाः षट् (06) प्रश्नाः भवन्ति षट्सु चतुर्णामुत्तराण्यपेक्षितानि भवन्ति। प्रत्येकं प्रश्नो दशाङ्कात्मको(10) वर्तन्ते।

| भागः | प्रश्नानां क्रमः | प्रश्नानां संख्या | उत्तरापेक्षितानां प्रश्नसंख्या | पूर्णाङ्काः |
|---|------------------|-------------------|--------------------------------|-------------|
| प्रथमखण्डः (अतिलघूत्तरीयाः प्रश्नाः) | 1 - 10 | 10 | 10 | 1x10=10 |
| द्वितीयखण्डः (लघूत्तरीयाः प्रश्नाः) | 11 - 17 | 7 | 5 | 6x5 =30 |
| तृतीयखण्डः (दीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः) | 18 - 23 | 6 | 4 | 10x4=40 |
| योगः | | 23 | 19 | 80 |

ध्यातव्यम् – पाठ्यक्रमस्य प्रत्येकं निर्धारितांशानां समावेश निर्मिते प्रश्नपत्रेऽवश्यमेव स्यादिति।

प्रथमषाण्मासिकः

First Semester

प्रथमषाण्मासिकः

प्रथमपत्रम्

CVYA101

लघुसिद्धान्तकौमुदी-1

क्रेडिट – 4

अङ्काः – 80

पत्रस्योद्देश्यानि परिणामाश्च:-

- छात्राः माहेश्वरसूत्रस्य बोधनपुरस्सरं प्रत्याहारनिर्माणे, इत्संज्ञादिज्ञाने, उदात्तादिस्वरज्ञाने, वर्णोच्चारणस्थानज्ञाने, प्रयत्नज्ञाने च दक्षा भवेयुः। तदनन्तरं ते वाक्यप्रयोगे एतेषां सुज्ञानतया व्यवहारसमर्थाः भविष्यन्ति।
- छात्राः अजादिपञ्चसन्धीनां सम्यक्तयावबोधानन्तरं कथने लेखने च समर्थाः स्युः। सन्धिज्ञानानन्तरं दैनिकवाक्यप्रयोगे लेखने सवत्रैव समागतयोः द्वयोर्वाक्ययोर्मध्ये सन्धि विधीयन्ते।

प्रथमभागः –

1. संज्ञाप्रकरणम् - 1 क्रेडिट, 15 अङ्काः

- 1.1. व्याकरणस्य परिचयः
- 1.2. आचार्यपरम्परा
- 1.3. लघुसिद्धान्तकौमुद्याः मंगलाचरणम्
- 1.4. माहेश्वरसूत्राणि
- 1.5. इत्-लोपादिसंज्ञाविधायकानि सूत्राणि
- 1.6. प्रत्याहारः
- 1.7. अकारभेदाः
- 1.8. स्थानप्रयत्नौ
- 1.9. संहितासंज्ञा
- 1.10. संयोगसंज्ञा
- 1.11. पदसंज्ञा

द्वितीयभागः –

2. अक्षसन्धिकरणम् - 1 क्रेडिट, 25 अङ्काः

- 2.1. सन्धिपरिचयः
- 2.2. यणसन्धिः
- 2.3. अयादिसन्धिः
- 2.4. गुणसन्धिः
- 2.5. वृद्धिसन्धिः
- 2.6. पररूपसन्धिः
- 2.7. दीर्घसन्धिः
- 2.8. पूर्वरूपसन्धिः
- 2.9. प्रकृतिभावसन्धिः

तृतीयभागः -

3. हल्सन्धिकरणम् - 1 क्रेडिट, 25 अङ्काः
 - 3.1. श्रुत्वसन्धिः
 - 3.2. घृत्वसन्धिः
 - 3.3. जश्त्वसन्धिः
 - 3.4. अनुनासिकसन्धिः
 - 3.5. पूर्वसवर्णसन्धिः
 - 3.6. चर्त्वसन्धिः
 - 3.7. छत्वसन्धिः
 - 3.8. अनुस्वारसन्धिः
 - 3.9. परसवर्णसन्धिः
 - 3.10. धुट्-कुक्-टुक्-तुक्-डमुट् आगमाः
 - 3.11. रुत्वम्
 - 3.12. जिह्वामूलीयम्
 - 3.13. उपध्मानीयम्

चतुर्थभागः -

4. विसर्गसन्धिकरणम् - 1 क्रेडिट, 15 अङ्काः
 - 4.1. सत्वम्
 - 4.2. रुत्वम्
 - 4.3. हलो लोपः
 - 4.4. रेफलोपः
 - 4.5. सुलोपः

निर्धारितग्रन्थः -

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी

सहायकग्रन्थाः -

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी, श्रीगोविन्दाचार्य, चैखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी, भीमसैन शास्त्री, भैमी प्रकाशन।

पाठयोजना -

| भागः | उपभागः | पाठ्यक्रमविवरणम् | Hyperlink | अध्यापनहोरा | क्रेडिट |
|-------|---------------------|------------------------------------|---|-------------|---------|
| 1. | संज्ञाप्रकरणम् - | | https://archive.org/details/LaghuSiddhantKaumudiBhaimi/Laghu%20Siddhant%20Kaumudi%20Bhaimi%201A/page/n13/mode/2up | 15 | 1 |
| | 1.1. | व्याकरणस्य परिचयः | | | |
| | 1.2. | आचार्यपरम्परा | | | |
| | 1.3. | लघुसिद्धान्तकौमुद्याः मंगलाचरणम् | | | |
| | 1.4. | माहेश्वरसूत्राणि | | | |
| | 1.5. | इत्-लोपादिसंज्ञाविधायकानि सूत्राणि | | | |
| | 1.6. | प्रत्याहारः | | | |
| | 1.7. | अकारभेदाः | | | |
| | 1.8. | स्थानप्रयत्नौ | | | |
| | 1.9. | संहितासंज्ञा | | | |
| | 1.10. | संयोगसंज्ञा | | | |
| | 1.11. | पदसंज्ञा | | | |
| 2. | अक्षसन्धिप्रकरणम् - | | | 20 | 1 |
| | 2.1. | सन्धिपरिचयः | | | |
| | 2.2. | यणसन्धिः | | | |
| | 2.3. | अयादिसन्धिः | | | |
| | 2.4. | गुणसन्धिः | | | |
| | 2.5. | वृद्धिसन्धिः | | | |
| | 2.6. | पररूपसन्धिः | | | |
| | 2.7. | दीर्घसन्धिः | | | |
| | 2.8. | पूर्वरूपसन्धिः | | | |
| | 2.9. | प्रकृतिभावसन्धिः | | | |
| 3 | हल्सन्धिप्रकरणम् - | | | 25 | 1 |
| | 3.1. | श्रुत्वसन्धिः | | | |
| | 3.2. | ष्टुत्वसन्धिः | | | |
| | 3.3. | जश्त्वसन्धिः | | | |
| | 3.4. | अनुनासिकसन्धिः | | | |
| | 3.5. | पूर्वसवर्णसन्धिः | | | |
| | 3.6. | चत्वंसन्धिः | | | |
| | 3.7. | छत्वसन्धिः | | | |
| | 3.8. | अनुस्वारसन्धिः | | | |
| | 3.9. | परसवर्णसन्धिः | | | |
| | 3.10. | धुट्-कुक्-टुक्-तुक्-डमुट् आगमाः | | | |
| | 3.11. | रुत्वम् | | | |
| | 3.12. | जिह्वामूलीयम् | | | |
| 3.13. | उपध्मानीयम् | | | | |
| 4 | विसर्गसन्धिः | | | 10 | 1 |
| | 4.1. | सत्वम् | | | |
| | 4.2. | रुत्वम् | | | |
| | 4.3. | हलो लोपः | | | |
| | 4.4. | रेफलोपः | | | |
| | 4.5. | सुलोपः | | | |
| | | | सम्पूर्णयोगः | 80 | 4 |

द्वितीयपत्रम्
MVYA102
लघुसिद्धान्तकौमुदी-1
क्रेडिट – 4
अङ्काः – 80

(पत्रमिदं व्याकरणविभागीयेतरच्छात्राणां कृते संकल्पितम्। व्याकरणविभागीयानाङ्कृते वेद-साहित्य-
सर्वदर्शन- न्याय-ज्योतिष-धर्मशास्त्र-वेदान्त-मीमांसेत्यादिषु एकं भविष्यति। तस्य पाठ्यक्रमः
तत्तद्विभागीयानां भविष्यति)

पत्रस्योद्देश्यानि परिणामाश्च:-

- अनधीतव्याकरणानां व्याकरणशास्त्रस्यावबोधः।
- छात्राः माहेश्वरसूत्रस्य बोधनपुरस्सरं प्रत्याहारनिर्माणे, इत्संज्ञादिज्ञाने, उदात्तादिस्वरज्ञाने, वर्णोच्चारणस्थानज्ञाने, प्रयत्नज्ञाने च दक्षा भवेयुः। तदनन्तरं वाक्यप्रयोगे एतेषां सुज्ञानतया व्यवहारसमर्थाः भविष्यन्ति।
- छात्राः अजादिपञ्चसन्धीनां सम्यक्तयावबोधानन्तरं कथने लेखने च समर्थाः स्युः। सन्धिज्ञानानन्तरं दैनिकवाक्यप्रयोगे लेखने सवत्रैव समागतयोः द्वयोर्वाक्ययोर्मध्ये सन्धि करिष्यन्ति।

प्रथमभागः –

1. संज्ञाप्रकरणम् - 1 क्रेडिट, 15 अङ्काः
 - 1.1. व्याकरणस्य परिचयः
 - 1.2. आचार्यपरम्परा
 - 1.3. लघुसिद्धान्तकौमुद्याः मंगलाचरणम्
 - 1.4. माहेश्वरसूत्राणि
 - 1.5. इत्-लोपादिसंज्ञाविधायकानि सूत्राणि
 - 1.6. प्रत्याहारः
 - 1.7. अकारभेदाः
 - 1.8. स्थानप्रयत्नौ
 - 1.9. संहितासंज्ञा
 - 1.10. संयोगसंज्ञा
 - 1.11. पदसंज्ञा

द्वितीयभागः –

2. अक्सन्धिकरणम् - 1 क्रेडिट, 25 अङ्काः
 - 2.1. सन्धिपरिचयः
 - 2.2. यणसन्धिः
 - 2.3. अयादिसन्धिः
 - 2.4. गुणसन्धिः
 - 2.5. वृद्धिसन्धिः
 - 2.6. पररूपसन्धिः

- 2.7. दीर्घसन्धिः
- 2.8. पूर्वरूपसन्धिः
- 2.9. प्रकृतिभावसन्धिः

तृतीयभागः –

3. हल्सन्धिकरणम् - 1 क्रेडिट, 25 अङ्काः
 - 3.1. श्रुत्वसन्धिः
 - 3.2. घृत्वसन्धिः
 - 3.3. जश्त्वसन्धिः
 - 3.4. अनुनासिकसन्धिः
 - 3.5. पूर्वसवर्णसन्धिः
 - 3.6. चर्त्वसन्धिः
 - 3.7. छत्वसन्धिः
 - 3.8. अनुस्वारसन्धिः
 - 3.9. परसवर्णसन्धिः
 - 3.10. धुट्-कुक्-टुक्-तुक्-डमुट् आगमाः
 - 3.11. रुत्वम्
 - 3.12. जिह्वामूलीयम्
 - 3.13. उपध्मानीयम्

चतुर्थभागः –

4. विसर्गसन्धिकरणम् - 1 क्रेडिट, 15 अङ्काः
 - 4.1. सत्वम्
 - 4.2. रुत्वम्
 - 4.3. हलो लोपः
 - 4.4. रेफलोपः
 - 4.5. सुलोपः

निर्धारितग्रन्थः -

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी

सहायकग्रन्थाः –

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी, श्रीगोविन्दाचार्य, चैखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी, भीमसैन शास्त्री, भैमी प्रकाशन।

पाठयोजना -

| भागः | उपभागः | पाठ्यक्रमविवरणम् | Hyperlink | अध्यापनहोरा | क्रेडिट |
|-------|--------------------|------------------------------------|---|-------------|---------|
| 1. | संज्ञाप्रकरणम् - | | https://archive.org/details/LaghuSiddhantKaumudiBhaimi/Laghu%20Siddhant%20Kaumudi%20Bhaimi%201A/page/n13/mode/2up | 15 | 1 |
| | 1.1. | व्याकरणस्य परिचयः | | | |
| | 1.2. | आचार्यपरम्परा | | | |
| | 1.3. | लघुसिद्धान्तकौमुद्याः मंगलाचरणम् | | | |
| | 1.4. | माहेश्वरसूत्राणि | | | |
| | 1.5. | इत्-लोपादिसंज्ञाविधायकानि सूत्राणि | | | |
| | 1.6. | प्रत्याहारः | | | |
| | 1.7. | अकारभेदाः | | | |
| | 1.8. | स्थानप्रयत्नौ | | | |
| | 1.9. | संहितासंज्ञा | | | |
| | 1.10. | संयोगसंज्ञा | | | |
| | 1.11. | पदसंज्ञा | | | |
| 2. | अच्सन्धिप्रकरणम् - | | | 20 | 1 |
| | 2.1. | सन्धिपरिचयः | | | |
| | 2.2. | यणसन्धिः | | | |
| | 2.3. | अयादिसन्धिः | | | |
| | 2.4. | गुणसन्धिः | | | |
| | 2.5. | वृद्धिसन्धिः | | | |
| | 2.6. | पररूपसन्धिः | | | |
| | 2.7. | दीर्घसन्धिः | | | |
| | 2.8. | पूर्वरूपसन्धिः | | | |
| | 2.9. | प्रकृतिभावसन्धिः | | | |
| 3 | हल्सन्धिप्रकरणम् - | | | 25 | 1 |
| | 3.1. | श्रुत्वसन्धिः | | | |
| | 3.2. | ष्टुत्वसन्धिः | | | |
| | 3.3. | जश्त्वसन्धिः | | | |
| | 3.4. | अनुनासिकसन्धिः | | | |
| | 3.5. | पूर्वसवर्णसन्धिः | | | |
| | 3.6. | चर्त्त्वसन्धिः | | | |
| | 3.7. | छत्वसन्धिः | | | |
| | 3.8. | अनुस्वारसन्धिः | | | |
| | 3.9. | परसवर्णसन्धिः | | | |
| | 3.10. | धुट्-कुक्-टुक्-तुक्-डमुट् आगमाः | | | |
| | 3.11. | रुत्वम् | | | |
| | 3.12. | जिह्वामूलीयम् | | | |
| 3.13. | उपध्मानीयम् | | | | |
| 4 | विसर्गसन्धिः | | | 10 | 1 |
| | 4.1. | सत्वम् | | | |
| | 4.2. | रुत्वम् | | | |
| | 4.3. | हलो लोपः | | | |
| | 4.4. | रेफलोपः | | | |
| | 4.5. | सुलोपः | | | |
| | | | सम्पूर्णयोगः | 80 | 4 |

तृतीयपत्रम्
IDCPSC103 राजनीतिविज्ञानम् / IDCPHL103 दर्शनशास्त्रम् / IDCEDN103 शिक्षाशास्त्रम् /
IDCASM103 असमीया / IDCHIS103 इतिहासः, एतेषु कश्चिदेकश्चेतव्यः।
क्रेडिट – 3
अङ्काः – 80

चतुर्थपत्रम्
AECENG104
आङ्ग्लम्
क्रेडिट – 3
अङ्काः – 80

पञ्चमपत्रम्
VACEVS105
पर्यावरणाध्ययनम्
क्रेडिट – 3
अङ्काः – 80

षष्ठपत्रम्
SECIT106 Information Technology / SECMC106 Mushroom Cultivation /
SECCS106 संस्कृतसम्भाषणम्, एतेषु कश्चिदेकश्चेतव्यः।
क्रेडिट – 3
अङ्काः – 80

द्वितीयषाण्मासिकः
Second Semester

प्रथमपत्रम्
CVYA201
लघुसिद्धान्तकौमुदी-2
क्रेडिट - 4
अङ्काः - 80

पत्रस्योद्देश्यानि परिणामाश्च -

- छात्रा अजन्तानां शब्दानां त्रिषु लिङ्गेषु निष्पत्तिज्ञाने समर्थाः भवेयुः। सिद्धिज्ञानपुरस्सरं यथालिङ्गम् एतेषां शब्दानां रूपाणि वाक्येषु करिष्यन्ति।
- छात्रा हलन्तानां शब्दानां त्रिषु लिङ्गेषु निष्पत्तौ पारङ्गताः स्युः। एतेषां शब्दानां सिद्धिपुरस्सरं रूपाणि वाक्येषु प्रयोगे समर्थाः भविष्यन्ति।
- अव्ययपदानामपि बोधानन्तरम् आवश्यकतानुसारम् अव्ययपदानि प्रयुज्यन्ते।

प्रथमभागः -

- 1.1. अजन्तपुंलिङ्गप्रकरणम् - 1 क्रेडिट 20 अङ्काः
 - 1.1.1. रामशब्दाद् विश्वपाशब्दपर्यन्तम्
 - 1.1.2. हरिशब्दाद् बहुश्रेयसीशब्दपर्यन्तम्
 - 1.1.3. प्रधीशब्दाद् ग्लौशब्दपर्यन्तम्
- 1.2. अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् - 0.5 क्रेडिट 10 अङ्काः
 - 1.2.1. रमाशब्दात् त्रिशब्दपर्यन्तम्
 - 1.2.2. द्विशब्दात् नौशब्दपर्यन्तम्
- 1.3. अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् - 0.5 क्रेडिट 10 अङ्काः
 - 1.3.1. ज्ञानब्दात् श्रीपशब्दपर्यन्तम्
 - 1.3.2. वारिशब्दात् सुनुशब्दपर्यन्तम्

द्वितीयभागः -

- 2.1. हलन्तपुंलिङ्गप्रकरणम् - 1 क्रेडिट 20 अङ्काः
 - 2.1.1. लिह् शब्दाद् भृस्ज् शब्दपर्यन्तम्
 - 2.1.2. त्यद् शब्दात् पयोमुच् शब्दपर्यन्तम्
 - 2.1.3. महत् शब्दाद् अदस् शब्दपर्यन्तम्
- 2.2. हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् - 0.5 क्रेडिट 10 अङ्काः
 - 2.2.1. उपानह् शब्दाद् अदस् शब्दपर्यन्तम्
- 2.3. हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् अव्ययञ्च - 0.5 क्रेडिट 10 अङ्काः
 - 2.3.1. स्वनडुद् अदस् शब्दपर्यन्तम्
 - 2.3.2. अव्ययप्रकरणम्

निर्धारितग्रन्थः -

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी

सहायकग्रन्थाः -

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी, श्रीगोविन्दाचार्य, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

पाठयोजना -

| भागः | उपभागः | पाठ्यक्रमविवरणम् | Hyperlink | अध्यापनहोरा | क्रेडिट | |
|------|-------------------------------------|-------------------------------------|---|-------------|---------|-----|
| 1. | अजन्तपुलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 1.1.1. | रामशब्दाद् विश्वपाशब्दपर्यन्तम् | https://archive.org/details/LaghuSiddhantKaumudiBhaimi/Laghu%20Siddhant%20Kaumudi%20Bhaimi%201A/ | 10 | 1 | |
| | 1.1.2. | हरिशब्दाद् बहुश्रेयसीशब्दपर्यन्तम् | | 6 | | |
| | 1.1.3. | प्रधीशब्दाद् ग्लौशब्दपर्यन्तम् | | 5 | | |
| | अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 1.2.1. | रमाशब्दात् त्रिशब्दपर्यन्तम् | | | 6 | 0.5 |
| | 1.2.2. | द्विशब्दात् नौशब्दपर्यन्तम् | | | 5 | |
| | अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 1.3.1. | ज्ञानब्दात् श्रीपशब्दपर्यन्तम् | | | 5 | 0.5 |
| | 1.3.2. | वारिशब्दात् सुनुशब्दपर्यन्तम् | | | 5 | |
| 2. | हलन्तपुलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 2.1.1. | लिह् शब्दाद् भृस्ञ् शब्दपर्यन्तम् | | 8 | 1 | |
| | 2.1.2. | त्यद् शब्दात् पयोमुच् शब्दपर्यन्तम् | | 8 | | |
| | 2.1.3. | महत् शब्दाद् अदस् शब्दपर्यन्तम् | | 6 | | |
| | हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 2.2.1. | उपानह् शब्दाद् अदस् शब्दपर्यन्तम् | | 5 | 0.5 | |
| | हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् अव्ययञ्च - | | | | | |
| | 2.3.1. | स्वनडुद् अदस् शब्दपर्यन्तम् | | 8 | 0.5 | |
| | 2.3.2. | अव्ययप्रकरणम् | | 5 | | |
| | सम्पूर्णयोगः | | | | 82 | 4 |

द्वितीयपत्रम्
MVYA202
लघुसिद्धान्तकौमुदी-2
क्रेडिट - 4
अङ्काः - 80

(पत्रमिदं व्याकरणविभागीयेतरच्छात्राणां कृते संकल्पितम्। व्याकरणविभागीयानाङ्कृते वेद-साहित्य-सर्वदर्शन-न्याय-ज्योतिष-धर्मशास्त्र-वेदान्त-मीमांसेत्यादिषु एकं भविष्यति। तस्य पाठ्यक्रमः तत्तद्विभागीयानां भविष्यति)

पत्रस्योद्देश्यानि परिणामाश्च -

- छात्रा अजन्तानां शब्दानां त्रिषु लिङ्गेषु निष्पत्तिज्ञाने समर्थाः भवेयुः। सिद्धिज्ञानपुरस्सरं यथालिङ्गम् एतेषां शब्दानां रूपाणि वाक्येषु करिष्यन्ति।
- छात्रा हलन्तानां शब्दानां त्रिषु लिङ्गेषु निष्पत्तौ पारङ्गताः स्युः। एतेषां शब्दानां सिद्धिपुरस्सरं रूपाणि वाक्येषु प्रयोगे समर्थाः भविष्यन्ति।
- अव्ययपदानामपि बोधानन्तरम् आवश्यकतानुसारम् अव्ययपदानि प्रयुज्यन्ते।

प्रथमभागः -

- 1.1. अजन्तपुंलिङ्गप्रकरणम् - 1 क्रेडिट 20 अङ्काः
 - 1.1.1. रामशब्दाद् विश्वपाशब्दपर्यन्तम्
 - 1.1.2. हरिशब्दाद् बहुश्रेयसीशब्दपर्यन्तम्
 - 1.1.3. प्रधीशब्दाद् ग्लौशब्दपर्यन्तम्
- 1.2. अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् - 0.5 क्रेडिट 10 अङ्काः
 - 1.2.1. रमाशब्दात् त्रिशब्दपर्यन्तम्
 - 1.2.2. द्विशब्दात् नौशब्दपर्यन्तम्
- 1.3. अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् - 0.5 क्रेडिट 10 अङ्काः
 - 1.3.1. ज्ञानब्दात् श्रीपशब्दपर्यन्तम्
 - 1.3.2. वारिशब्दात् सुनुशब्दपर्यन्तम्

द्वितीयभागः -

- 2.1. हलन्तपुंलिङ्गप्रकरणम् - 1 क्रेडिट 20 अङ्काः
 - 2.1.1. लिह् शब्दाद् भृस्ज् शब्दपर्यन्तम्
 - 2.1.2. त्यद् शब्दात् पयोमुच् शब्दपर्यन्तम्
 - 2.1.3. महत् शब्दाद् अदस् शब्दपर्यन्तम्
- 2.2. हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् - 0.5 क्रेडिट 10 अङ्काः
 - 2.2.1. उपानह् शब्दाद् अदस् शब्दपर्यन्तम्
- 2.3. हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् अव्ययञ्च - 0.5 क्रेडिट 10 अङ्काः
 - 2.3.1. स्वनडुद् अदस् शब्दपर्यन्तम्
 - 2.3.2. अव्ययप्रकरणम्

निर्धारितग्रन्थः -

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी

सहायकग्रन्थाः -

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी, श्रीगोविन्दाचार्य, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

पाठयोजना -

| भागः | उपभागः | पाठ्यक्रमविवरणम् | Hyperlink | अध्यापनहोरा | क्रेडिट | |
|------|-------------------------------------|-------------------------------------|---|-------------|---------|---|
| 1. | अजन्तपुलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 1.1.1. | रामशब्दाद् विश्वपाशब्दपर्यन्तम् | https://archive.org/details/LaghuSiddhantKaumudiBhaimi/Laghu%20Siddhant%20Kaumudi%20Bhaimi%201A/ | 10 | 1 | |
| | 1.1.2. | हरिशब्दाद् बहुश्रेयसीशब्दपर्यन्तम् | | 6 | | |
| | 1.1.3. | प्रधीशब्दाद् ग्लौशब्दपर्यन्तम् | | 5 | | |
| | अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 1.2.1. | रमाशब्दात् त्रिशब्दपर्यन्तम् | | 6 | 0.5 | |
| | 1.2.2. | द्विशब्दात् नौशब्दपर्यन्तम् | | 5 | | |
| | अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 1.3.1. | ज्ञानब्दात् श्रीपशब्दपर्यन्तम् | | 5 | 0.5 | |
| | 1.3.2. | वारिशब्दात् सुनुशब्दपर्यन्तम् | | 5 | | |
| 2. | हलन्तपुलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 2.1.1. | लिह् शब्दाद् भृञ् शब्दपर्यन्तम् | | 8 | 1 | |
| | 2.1.2. | त्यद् शब्दात् पयोमुच् शब्दपर्यन्तम् | | 8 | | |
| | 2.1.3. | महत् शब्दाद् अदस् शब्दपर्यन्तम् | | 6 | | |
| | हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् - | | | | | |
| | 2.2.1. | उपानह् शब्दाद् अदस् शब्दपर्यन्तम् | 5 | 0.5 | | |
| | हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् अव्ययञ्च - | | | | | |
| | 2.3.1. | स्वनडुद् अदस् शब्दपर्यन्तम् | 8 | 0.5 | | |
| | 2.3.2. | अव्ययप्रकरणम् | 5 | | | |
| | सम्पूर्णयोगः | | | | 82 | 4 |

तृतीयपत्रम्
IDCPSC203 राजनीतिविज्ञानम् / IDCPHL203 दर्शनशास्त्रम् / IDCEDN203 शिक्षाशास्त्रम् /
IDCASM203 असमीया / IDCHIS203 इतिहासः, एतेषु कश्चिदेकश्चेतव्यः।
क्रेडिट – 3
अङ्काः – 80

चतुर्थपत्रम्
AECASM204 असमीया / AECSKT204 संस्कृतम्,
एतयोः कश्चिदेकश्चेतव्यः
क्रेडिट – 3
अङ्काः – 80

पञ्चमपत्रम्
VACYOG205
Introduction to Yoga
क्रेडिट – 3
अङ्काः – 80

षष्ठपत्रम्
VACCWT206 Creative Writing and Translation /
VACSF206 Preparation Short flim
एतयोः कश्चिदेकश्चेतव्यः।
क्रेडिट – 3
अङ्काः – 80